• कविताएं..

सूरज कभी नहीं डूबता

कोई अन्दर
उतरता है
सुबह जैसा
फिर
अपनी बातों के
खुलते
दिन में
सूरज की फ़िक्र किए बग़ैर
चढ़ता ऊंचाइयां ब्रह्माण्ड की
इस हलचल से
जाग उठते हैं और
अपने कामों में डूबकर
नहाते हैं
रूखड़ रगड़ में से भी
पैदा करते हैं जीवन की आग
दीप्तवान
गलियारों की
पंक्तियां-पंक्तियां
उम्र के पसरकर
फैले अन्दाज़ में
धड़कती हैं और
खिंचती यात्राओं के
अपने दिन रचती हैं
इस दिन में
हर सूरत में
अपना काम करने से
जो नहीं चूकता
उसका सूरज कभी नहीं डूबता !

■ *मलय*

देवता नाराज़ थे

खाली हाथ
वह लौट आया
मन्दिर के दहलीज से
नहीं ले जा सका
धूप-बत्ती, नारियल
तो देवता नाराज़ थे
झोपड़ी में
बिलकते रहे
बच्चे भूख से
भगवान
एक भ्रम है
मान लिया उसने

■ *नित्यानंद गायेन*

• कहानी/–ज्ञानरंजन

पिता...

उसने अपने बिस्तरे का अंदाज लेने के लिए मात्र आध पल को बिजली जलाई। बिस्तरे फर्श पर बिछे हुए थे। उसकी स्त्री ने सोते-सोते ही बड़बड़ाया, 'आ गए' और बच्चे की तरफ करवट लेकर चुप हो गई। लेट जाने पर उसे एक बड़ी डकार आती मालूम पड़ी, लेकिन उसने डकार ली नहीं। उसे लगा कि ऐसा करने से उस चुप्पी में खलल पड़ जाएगा, जो चारों तरफ भरी है, और काफी रात गए ऐसा होना उचित नहीं है।

अभी घनश्यामनगर के मकानों के लंबे सिलसिलों के किनारे-किनारे सवारी गाड़ी धड़धड़ाती हुई गुजरी। थोड़ी देर तक एक बहुत साफ भागता हुआ शोर होता रहा। सर्दियों में जब यह गाड़ी गुजरती है तब लोग एक प्रहर की खासी नींद ले चुके होते हैं। गर्मियों में साढ़े ग्यारह का कोई विशेष मतलब नहीं होता। यों उसके घर में सभी जल्दी सोया करते, जल्दी खाया और जल्दी उठा करते हैं।

आज बेहद गर्मी है। रास्ते-भर उसे जितने लोग मिले, उन सबने उससे गर्म और बेचैन कर देनेवाले मौसम की ही बात की। कपड़ों की फजीहत हो गई। बदहवासी, चिपचिपाहट और थकान है। अभी जब सवारी गाड़ी शोर करती हुई गुजरी, तो उसे ऐसा नहीं लगा कि नींद लगते-लगते टूट गई हो जैसा जाड़ों में प्रायः लगता है। बल्कि यों लगाकि अगर सोने की चेष्टा शुरू नहीं की गई तो सचमुच देर हो जाएगी। उसने जम्हाई ली, पंखे की हवा बहुत गर्म थी और वह पुराना होने की वजह से चिढ़ाती-सी आवाज भी कर रहा है। उसको लगा, दूसरे कमरों में भी लोग शायद उसकी ही तरह जम्हाइयां ले रहे होंगे। लेकिन दूसरे कमरों के पंखे पुराने नहीं हैं। उसने सोचना बंद करके अन्य कमरों की आहट लेनी चाही। उसे कोई बहुत मासूम-सी ध्वनि भी एक-डेढ़ मिनट तक नहीं सुनाई दी, जो सन्नाटे में काफी तेज होकर आ सकती हो।

तभी पिता की चारपाई बाहर चरमराई। वह किसी आहट से उठे होंगे। उन्होंने डांटकर उस बिल्ली का रोना चुप कराया जो शुरू हो गया था। बिल्ली थोड़ी देर चुप रहकर फिर रोने लगी। अब पिता ने डंडे को गच पर कई बार पटका और उस दिशा की तरफ खदेड़ने वाले ढंग से दौड़े जिधर से रोना आ रहा था और 'हट्ट-हट्ट' चिल्लाए।

जब वह घूम-फिरकर लौट रहा था तो पिता अपना बिस्तर बाहर लगाकर बैठे थे। कनखी से उसने उन्हें अपनी गंजी से पीठ का पसीना रगड़ते हुए देखा और बचता हुआ वह घर के अंदर दाखिल हो गया। उसे लगा कि पिता को गर्मी की वजह से नींद नहीं आ रही है। लेकिन उसे इस स्थिति से रोष हुआ। सब लोग, पिता से अंदर पंखे के नीचे सोने के लिए कहा करते हैं, पर वह जरा भी नहीं सुनते। हमें क्या, भोगें कष्ट!

कुछ देर पड़े रहने के बाद वह उठा और उसने उत्सुकतावश खिड़की से झांका। सड़क की बत्ती छाती पर है। गर्मियों में यह बेहद अखर जाता है। पिता ने कई बार करवटें बदलीं। फिर शायद चैन की उम्मीद में पाटी पर बैठ पंखा झलने लगे हैं। पंखे की डंडी से पीठ का वह हिस्सा खुजाते हैं जहां हाथ की उंगलियां दिक्कत से पहुँचती हैं। आकाश और दरख्तों की तरफ देखते हैं। रिलीफ पाने की किसी बहुत हल्की उम्मीद में शिकायत उगलते हैं - 'बड़ी भयंकर गर्मी है, एक पत्ता भी नहीं डोलता।' उनका यह वाक्य, जो नितांत व्यर्थ है, अभी-अभी बीते क्षण में डूब गया। गर्मी-बरकरार है और रहेगी, क्योंकि यह जाड़े-बरसात का मौसम नहीं है। पिता उठकर घूमने लगते हैं। एक या दो बार घर का चक्कर चौकीदारों की तरह हो ओ करते हए लगाते हैं, ताकि कोई सेंध-वेंध न लग सके। लौटकर थके स्वर में 'हे ईश्वर' कहते हुए उँगली से माथे का पसीना काटकर जमीन पर चुवाने लगते हैं।

बड़ा गजब है, कमरे की एक दीवार से टिककर बैठ जाने पर वह काफी तनाव में सोचने लगा। अंदर कमरों में पंखों के नीचे घर के सभी दूसरे लोग आराम से पसरे हैं।

इस साल जो नया पैडस्टल खरीदा गया हे वह आँगन में दादी अम्मा के लिए लगता है। बिजली का मीटर तेज चल रहा होगा। पैसे खर्च हो रहे हैं, लेकिन पिता की रात कष्ट में ही है...

बड़ा गजब है, कमरे की एक दीवार से टिककर बैठ जाने पर वह काफी तनाव में सोचने लगा। अंदर कमरों में पंखों के नीचे घर के सभी दूसरे लोग आराम से पसरे हैं। इस साल जो नया पैडस्टल खरीदा गया हे वह आँगन में दादी अम्मा के लिए लगता है। बिजली का मीटर तेज चल रहा होगा। पैसे खर्च हो रहे हैं, लेकिन पिता की रात कष्ट में ही है। लेकिन गजब यह नहीं है। गजब तो पिता की जिद है, वह दूसरे का आग्रह-अनुरोध मानें तब न! पता नहीं क्यों, पिता जीवन की अनिवार्य सुविधाओं से भी चिढ़ते हैं। वह झल्लाने लगा।

चौक से आते वक्त चार आने की जगह तीन आने और तीन आने में तैयार होने पर, दो आने में चलनेवाले रिक्शे के लिए पिता घंटे-घंटे खड़े रहेंगे। धीरे-धीरे सबके लिए सुविधाएं जुटाते रहेंगे, लेकिन खुद उसमें नहीं या कम से कम शामिल होंगे। पहले लोग उनकी काफी चिरौरी किया करते थे, अब लोग हार गए हैं। जानने लगे हैं कि पिता के आगे किसी की चलेगी नहीं।

आज तक किसी ने पिता को वाश-बेसिन में मुंह-हाथ धोते नहीं देखा। बाहर जाकर बगियावाले नल पर ही कुल्ला-दातुन करते हैं। दादा भाई ने अपनी पहली तनख्वाह में गुसलखाने में उत्साह के साथ एक खूबसूरत शावर लगवाया, लेकिन पिता को अर्से से हम सब आंगन में धोती को लंगोटे की तरह बांधकर तेल चुपड़े बदन पर बाल्टी-बाल्टी पानी डालते देखते आ रहे हैं। खुले में स्नान करेंगे, जनेऊ से छाती और पीठ का मैल काटेंगे। शुरू में दादा भाई ने सोचा, पिता उसके द्वारा शावर लगवाने से बहुत खुश होंगे और उन्हें नई चीज का उत्साह होगा। पिता ने जब कोई उत्साह प्रकट नहीं किया, तो दादा भाई मन-ही-मन काफी निराश हो गए। एक-दो बार उन्होंने हिम्मत करके कहा भी, 'आप अंदर आराम से क्यों नहीं नहाते?' तब भी पिता आसानी से उसे टाल गए।

लड़कों द्वारा बाजार से लाई बिस्किटें, महंगे फल पिता कुछ भी नहीं लेते। कभी लेते भी हैं तो बहुत नाक-भौं सिकोड़कर, उसके बेस्वाद होने की बात पर शुरू में ही जोर दे देते हुए। अपनी अमावट, गजक और दाल-रोटी के अलावा दूसरों द्वारा लाई चीजों की श्रेष्ठता से वह कभी प्रभावित नहीं होते। वह अपना हाथ-पांव जानते हैं, अपना अर्जन, और उसी में उन्हें संतोष है। वे पुत्र, जो पिता के लिए कुल्लू का सेब मंगाने और दिल्ली एंपोरियम से बढ़िया धोतियां मंगाकर उन्हें पहनाने का उत्साह रखते थे, अब तेजी से पिता-विरोधी होते जा रहे हैं। सुखी बच्चे भी अब गाहे-बगाहे मुंह खोलते हैं और क्रोध उगल देते हैं।

लद्द-लद्द, बाहर आम के दो सीकरों के लगभग एक साथ गिरने की आवाज आई। वह जानता है, पिता आवाज से स्थान साधने की कोशिश करेंगे। टटोलते-टटोलते अंधेरे में आम खोजेंगे और खाली गमले में इकट्ठा करते जाएंगे। शायद ही रात में एक-दो आम उसके चूक जाते हैं, ढूंढ़ने पर नहीं मिलते, जिनको सुबह पा जाने के संबंध में उन्हें रात-भर संदेह होता रहेगा।

दीवार से काफी देर एक ही तरह टिके रहने से उसकी पीठ दुखने लगी थी। नीचे रीढ़ के कमरवाले हिस्से में रक्त की चेतना बहुत कम हो गई। उसने मुद्रा बदली। बाहर पिता ने फाटक खोलकर सड़क पर लड़ते-चिचियाते कुत्तों का हड़काया। उसे यहाँ बहुत खीज हुई। **–जारी**

• शायरी...

ये उर-सागर के सीप तुम्हें देता हूं।
ये उजले-उजले सीप तुम्हें देता हूँ ।
है दर्द-कीट ने युग-युग इन्हें बनाया
आंसू के खारी पानी से नहलाया

◆◆◆

जब रह न सके ये मौन,
स्वयं तिर आए भव तट पर
काल तरंगों ने बिखराए
है आँख किसी की खुली
किसी की सोती खोजो,
पा ही जाओगे कोई मोती
ये उर सागर की सीप तुम्हें देता हूं
ये उजले-उजले सीप तुम्हें देता हूं

–भारत भूषण

◆◆◆

बहुत मुश्किल है शेवा-ए-तस्लीम
हम भी आखिर को जी चुराने लगे
वक्त-ए-रुखसत था सख्त -हाली- पर
हम भी बैठे थे जब वो जाने लगे

-अल्ताफ़ हुसैन हाली

• हवा से ज़र्द पत्ते...

हवा से ज़र्द पत्ते गिर रहे हैं
किताबों के वरक़ बिखरे पड़े हैं
इसी पानी में मछली का मकां हैं
इसी पानी मे प्यासे हम मेरे हैं
जहां गुलज़ार खिलता था हंसी का
वहीं चिमगादड़ों के घोंसले हैं
अंधेरे में डरा देते हैं हम को
ये कपड़े खूंटियों पर जो टंगे हैं
कभी तो ख़ाक में वो भी मिलेंगे
अभी तो चांद से 'फ़िक्री' बने हैं

–प्रकाश फ़िकरी